REDMI NOTE 6 PRO
MI DUAL CAMERA

के राजनीतिक इतिहास में "शिमला सम्मेलन" एक दुर्घटना है। यह प्रथम अवसर था कि जबकि भारत और ब्रिटेन के बीच आधारभूत राजनीतिक प्रश्न पर नहीं, वरन विभिन्न भारतीय वर्गों को विभाजित करनेवाले साम्प्रदायिक प्रश्न पर असफल हो गई।" आजाद के ही शब्दों में, "यदि जिन्ना के विरोध के कारण सम्मेलन भंग न हो गया होता तो परिणाम यह होता कि 14 सदस्यों की परिषद में 7 मुसलमान होते, जबकि उनकी संख्या भारत में लगभग एक चौथाई ही थी। यह कांग्रेस की उदारता का प्रमाण था और मुस्लिम लीग की मूर्खता का।" इस प्रकार 'शिमला सम्मेलन' जिन्ना की हठधर्मी के कारण असफल हुआ। कुछ लोग इसे ब्रिटिश चाल भी कहते हैं। मुस्लिम लीग तथा ब्रिटिश सरकार के बीच गहरी सांठ-गाँठ थी जिसका जिन्ना ने फायदा उठाया।

(समाप्त)

डॉ० राजू मोची
विभागाध्यक्ष - राजनीति विज्ञान
डी.के. कालेज, डुमराँव
दिनांक 27/08/2020

क्रिप्स प्रस्ताव (CRIPPS MISSION PLAN) (1)

सन 1941 का वर्ष समाप्त ही हो रहा था कि एक महत्वपूर्ण घटना ने विश्वयुद्ध को एक नया और महत्वपूर्ण मोड़ पर खड़ा कर दिया जिसके परिणामस्वरूप संयुक्त राज्य अमेरिका भी युद्ध में सम्मिलित हो गया। यह घटना 6 दिसम्बर को जापान द्वारा पर्ल हार्बर पर आक्रमण। जापान की युद्ध सफलताओं ने भारत के महत्व को विशेष रूप से बढ़ा दिया। ब्रिटिश प्रशासन को भारतीयों के पूर्ण सहयोग की आवश्यकता थी और वह तब तक संभव नहीं था जब तक ब्रिटिश शासन भारत में इस संवैधानिक गतिरोध को समाप्त करने के लिए किसी नयी नीति की घोषणा न करें। रंगून पर जापान के अधिकार के ठीक चार दिन बाद 11 मार्च 1942 को चर्चिल ने स्टैफर्ड क्रिप्स को इस समस्या के समाधान के सन्दर्भ में भारत भेजने के निर्णय की घोषणा की। क्रिप्स एक सफल राजनयिक माने जाते थे। वे समाजवादी विचारधारा के नेता थे तथा रूस के साथ संधि करने में उन्होंने काफी प्रसिद्धि प्राप्त की थी। वे भारतीय नेताओं से भी परिचित थे और उन्हें जवाहरलाल नेहरू का मित्र माना जाता था। 22 मार्च 1942 को क्रिप्स भारत आए। उन्होंने भारत के विभिन्न दलों से बातचीत की तथा उसके बाद भारत के वैधानिक गतिरोध को दूर करने के लिए एक योजना प्रस्तुत की, जिसे 'क्रिप्स प्रस्ताव' कहा जाता है।

क्रिप्स मिशन को भारत भेजने के कारण :- क्रिप्स मिशन को भारत भेजने के निम्नलिखित कारण थे —

(i) जापान का खतरा :- क्रिप्स को भारत भेजने का पहला और तात्कालिक कारण युद्ध की बिगड़ती हुई स्थिति और भारतीय संकट था। जापानी सेनाएँ फिलीपाइन्स, मलाया, इंडोनेशिया, इण्डोचायना, सिंगापुर पर विजय प्राप्त कर चुकी थी। इसके बाद बर्मा को रौंदती हुई भारत की सीमाओं में प्रवेश कर चुकी थी।

(ii) ब्रिटेन पर मित्र राष्ट्रों का दबाव :- भारत की राजनीतिक गुत्थी को सुलझाने के लिए ब्रिटेन पर मित्र राष्ट्र भी बराबर दबाव डाल रहे थे। पर्ल हार्बर पर जापान के आक्रमण के बाद यह दबाव और तेज हो गया था। अमरीकन राष्ट्रपति रूजवेल्ट ने ब्रिटेन को बताया कि एटलांटिक चार्टर भारत पर भी लागू होता है, उसे भी आत्मनिर्णय का अधिकार है। दूसरी ओर चीन के राष्ट्रपति मार्शल च्यांग काई शेक ने भारतीयों से युद्ध में अंग्रेजों की सहायता देने की अपील की तथा राष्ट्रपति ने ब्रिटिश सरकार से भारत को शीघ्र ही स्वतंत्रता प्रदान करने के लिए दबाव डाला। आस्ट्रेलिया के विदेश मंत्री डॉ० इवाट ने भी भारत की स्वतंत्रता की माँग का जोरदार समर्थन किया।

(iii) ब्रिटिश जनमत :- ब्रिटिश संसद तथा ब्रिटेन के दूसरे प्रभावशाली सदस्यों ने भारत की स्वतंत्रता का समर्थन किया था।

REDMI NOTE 6 PRO
MI DUAL CAMERA

काँग्रेस द्वारा क्रिप्स प्रस्तावों की अस्वीकृति :- काँग्रेस ने निम्न कारणों से क्रिप्स प्रस्तावों को ठुकरा दिया।

(i) औपनिवेशिक स्वराज्य प्रदान करने की कोई अवधि निश्चित नहीं की गयी थी।

(ii) संविधान सभा में देशी रियासतों के प्रतिनिधियों को उनके नरेश नामजद करें, वह चाहती थी कि उनका जनता द्वारा निर्वाचन होना चाहिए।

(iii) क्रिप्स योजना में परोक्ष रूप से न केवल पाकिस्तान निर्माण की माँग को स्वीकार कर लिया गया था बल्कि प्रान्तों को यह स्वतंत्रता भी दी जा रही थी कि वे चाहें तो नई व्यवस्था अपना लें।

(iv) अल्पसंख्यकों के हितों के लिए सरकार एक संधि भी करना चाहती थी और संधि की शर्तें स्पष्ट नहीं थी।

(v) क्रिप्स प्रस्तावों में काँग्रेस की दो माँगों को ठुकरा दिया गया था। प्रथम यह कि वायसराय नाममात्र के प्रधान के रूप में कार्य करें और दूसरा यह कि तुरन्त एक राष्ट्रीय सरकार का निर्माण होना चाहिए।

क्रिप्स प्रस्तावों की लीग द्वारा अस्वीकृति :- 11 अप्रैल 1942 को मुस्लिम लीग ने
प्रस्तावों को ठुकरा दिया क्योंकि इसमें प्रत्यक्ष रूप से पाकिस्तान निर्माण की माँग को
स्वीकार नहीं किया गया। लीग मुसलमानों के लिए पृथक संविधान सभा चाहती थी।
क्रिप्स प्रस्तावों को सिखों, हरिजनों तथा हिन्दू महासभा ने ठुकरा दिया। सिखों का मत
था कि पंजाब को भारत से अलग नहीं होने देंगे। उदारवादी नेता सर तेज बहादुर सप्रू,
डॉ जयकर आदि ने 'क्रिप्स योजना को आत्मनिर्णय के सिद्धांत का उपहास' कहकर ठुकरा दिया।
हिन्दू महासभा ने क्रिप्स प्रस्ताव को 'पीछे के दरवाजे से पाकिस्तान की स्थापना की चेष्टा'
तथा भारत के बलकानिस्तान (देश को अनेक टुकड़ों में बाँटने की चाल) कहकर अस्वीकार कर
दिया।

जब भारत के प्रमुख दलों ने क्रिप्स के सुझावों को मानने से इंकार कर दिया तो क्रिप्स ने 11 अप्रैल 1942 को इन सुझावों को वापस ले लिया।

निष्कर्ष :- क्रिप्स मिशन से कोई भी खुश नहीं हुआ। प्रस्तावों को अचानक 11 अप्रैल 1942 को वापस ले लिया गया। इस मिशन की विफलता का मुख्य कारण यह था कि क्रिप्स द्वारा प्रस्तुत प्रस्ताव दल के लिए संतोषप्रद सिद्ध नहीं हुए। साथ ही, ब्रिटिश सरकार भी भारतीयों को सत्ता हस्तांतरित करने के लिए बहुत इच्छुक नहीं थी। डॉ० पट्टाभि सीतारमैया के अनुसार क्रिप्स प्रस्तावों में विभिन्न रुचियों को संतुष्ट करने के विभिन्न पदार्थ थे, जैसे काँग्रेस के लिए औपनिवेशिक स्वराज्य और संविधान सभा, मुस्लिम लीग के लिए किसी भी प्रांत को भारत से अलग होने का अधिकार और देशी नरेशों के लिए संघ में शामिल होने या न होने का स्वेच्छाधिकार। फलतः यह प्रस्ताव किसी को संतुष्ट नहीं कर सका।

डॉ० रज्जू मोची
विभागाध्यक्ष - राजनीति विज्ञान
डी॰के॰ कालेज, डुमरॉव
दिनांक 26/08/2020

REDMI NOTE 6 PRO
MI DUAL CAMERA